सूत्र १.

अंग १.

बाल ब्रह्मचारि पंडित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज कृत

हिन्दी भाषानुवाद सहित.

अनुत्तरोववाई दशांग सूत्र

प्रसिद्ध कर्ता-दक्षिण हैदराबाद निवासी.

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौंहरी

अमूल्य.

प्रत १०००.

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय सीकंदराबाद (दक्षिण.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अमूल्य शास्त्र दानदाता.

जैन स्थम्भ दानवीर

स्व. राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी. जौंहरी.

जन्म सं० १९१९. स्वर्गस्थ सं० १९७४.

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण.)

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर

लाला ज्वालाप्रसादजी, जौंहरी.

जन्म सं० १९५०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुत्तरोपपातिक शास्त्र की-प्रस्तावना.

सद्गुरुणेनमस्कृत्य, भव्यजन सुखबोधवे ॥ अनुत्तरोपपातिकसूत्रस्य, वार्तिकंलिख्यतेमया ॥ १॥

सूत्रज्ञान के दाता सद्गुरु महाराज को सविनय वंदना नमस्कार करके इस अनुत्तरोपपातिक शास्त्रार्थ का भव्यजनों को सुख से बोध होने के लिये हिन्दी भाषानुवाद करता हूं ॥ १० ॥ अष्टांग अंतगड दशा सूत्र में सर्वांश कर्मोंका क्षय करके जिन जीवोंने मोक्ष प्राप्त की उनका कथन किया. और जो जीवों कर्म क्षय का उद्यम करते सर्व कर्मांश क्षय हो इतने आयुष्य के अभाव से तथा शुभ कर्मों (पुण्य) की बृद्धि होने से जो जीवों उस भव में मोक्ष प्राप्त नहीं करसके, परंतु एक भवान्तर से मोक्ष प्राप्त करेंगे. उन बृद्धिहुवे पुण्य फल को भोगवने के लिये २६ ही स्वर्ग के ८४९७९०२३ विमानों में से अत्युत्तम सर्वोपरी जो पांच अनुत्तर विमान हैं जहां जघन्य ३१ सागरोपम उत्कृष्ट ३३ सागरोपमका आयुष्य है वे एकान्त सम्यक दृष्टी जीवों हैं वहां जाकर जो पुण्यात्मामहापुरुषोंउत्पन्नहुवेहैं वे.

श्लोक—गुणैर्यदध्ययन कलापकीर्तिता, अनुत्तरा प्रशामिणु जालिमुख्यकाः ॥
अनुत्तरश्रियम भजअनुत्तरोपपातिकोपपदशाः श्रयामिताः ॥ १ ॥

अर्थात्—जाली आदि २३ श्रेणिक राजा के पुत्रों और धन्नादि १० श्रेष्ट पुत्रों, यों २३ जीवों जो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुत्तर विमान में उत्पन्न हुवे हैं उन का कथन किया है. इस सूत्र के तीन वर्ग और ३३ अध्ययन हैं. इस का उतारा खेतश्री जीवराज की तरफ से छपी हुइ प्रतपर से किया है और अनुवाद सूत्रानुसार किया है. दृष्टीदोष से बहुत स्थान अशुद्धीयों रहगइ है. उने शुद्ध कर पठन कीजीये.

अनुत्तरोपपातिक सूत्रानुक्रमणिका.

१ प्रथम वर्ग-१० अध्ययन १ प्रथम जालीकुमार का अध्ययन २ गुणरत्न संवत्सर तप का यंत्र ९ नव ही अध्ययन संक्षेप में ... १२

२ द्वितीय वर्ग १३ अध्ययन संक्षेप में ... १३

३ तृतीय वर्ग. १० अध्ययन प्रथम अध्ययन धन्नाजी का ९ नव ही अध्ययन संक्षेप में ... ४७

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषि महाराज के सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद किया, उन ३२ ही शास्त्रों की १०००-१००० प्रतों को सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवाकर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी ने सब को अमूल्य लाभ दिया है!

शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद् निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महा-लाभके लोभी बन साधुमार्गीय जैन धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने का रु. २०००० का खर्च कर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ में सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होना संभव नहीं होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों को गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

हैद्राबाद सिकन्द्राबाद जैन संघ

अवश्यकीय सूचना

झोवाला (काठियावाड) निवासी मणीलाल शीवलाल जो शास्त्रोद्धार कार्यालय का मेनेजर था और जो शास्त्रोद्धार जैसे महा उपकारि और धार्मीक कार्य के हिसाब को संतोष जनक और विश्वाशनीय ढंग से नहीं समझा सकने के सबब से हमको पूर्ण अविश्वाश होगया और आप खुद घबरा कर बिना इजाजत एक दम चलागया इस लिये जो प्रेश अखबार और धार्मीक कार्य के लिये मणीलाल को देना चाहाथा वो उसकी अप्रमाणिकता और घोटाला देखकर उस को नही देते हुवे आग्रा निवासी जैनपथप्रदर्शक मासिक के प्रसिद्ध कर्ता बाबू पदम सिंघ जैनको धार्मिक कार्य निमित्त दिया गया है सर्व सज्जन उस अखबार से फायदा उठावें

[illegible]

अपनी छत्ती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी. वैय्याव्रत्यी श्री राज ऋषिजी. तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी. इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला. दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीसे वार्तालाप,कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया, जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके. इस लिये इस कार्य बदल उक्त मुनिवरों का भी बडा उपकार है.

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहनलालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी, तपस्वीजी माणकचन्दजी, कविवर श्री अमी ऋषिजी,सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी.पं. श्री नथमलजी,पं. श्री जोरावरमलजी. कविवर श्री नानचन्द्रजी.प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी.गुणज्ञसतीजी श्री रंभाजी. धोराजी सर्वज्ञ भंडार, भीना सरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, लींबडी भंडार, कुचेरा भंडार,इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आभारी-महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज !

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय२पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्धारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के अभारी होंगे

आपका-अमोल ऋषि.

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तल दबे हुअे हम आप के बडे अभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुध्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गिय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए. इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!
आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आपके परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका. इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ नवमम्-अणुत्तरोववाई दशाङ्ग सूत्रम् ॥

* प्रथम-वर्ग *

सूत्र

तेणं कालेणं, तेणं समएणं, रायगिहे णामं णयरे होत्था, सेणियनामं राया होत्था, चेलणा. देवीए गुणासिलाए चेइए वण्णओ ॥ १ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं रायगिहे नयरे, अज्जसुहम्मणामंत्थेरे समोसरिए, परिसाणिग्गया धम्मकहिओ परिसापडिगया ॥ २ ॥ जंबू जाव पज्जुवासई एवं वयासी-जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं

अर्थ

उसकाल उससमयमें राजगृही नगरीमें श्रेणिक राजा राज्य करता था, उसकी चेलना नाम की राणी थी, ईशान कोन में गुनासिला नामक बागथा॥१॥उसकाल उससमयमें गुनासिला बागमें आर्य सुधर्मा स्वामीजी पधारे, परिषदा वन्दने आइ, धर्म कथासुनाइ, परिषदा पीछी गई ॥ २ ॥ आर्य जंबू स्वामी आर्य सुधर्मा स्वामी को वंदना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्सणं भंते ! अंगस्स अणुत्तरोववाई दसाणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ३ ॥ तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाई दसाणं तिणि वग्गा पण्णत्ता ॥४॥ जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाई दसाणं तिणिवग्गा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते! वग्गस्स अणुत्तरोववाई दसाणं समेणणं जाव संपत्तेणं के अज्झयणा पण्णत्ता? ॥५॥ एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाई दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस

अर्थ

नमस्कार कर पूछने लगे कि-अहो भगवान ! यदि श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् मोक्ष पधारे उनोंने आठवा अंग अंतकृत दशांग का उक्त अर्थ कहा तो नववा अंग अनुत्तरोववाइ दशांगका क्या अर्थ कहा है? ॥३॥तब वे सौधर्म स्वामी जंबू स्वामी से यों कहने लगे-यों निश्चय है जंबू ! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उनोंने नववा अंग अनुत्तरोववाइ दशाके तीन वर्ग कहे हैं ॥ ४ ॥ यदि अहो भगवाग ! नववा अंग अनुत्तरोववाइ दशाके तीन वर्ग कहे हैं तो अनुत्तरोववाइ के दशाके प्रथम वर्ग के कितने अध्ययन कहे हैं ? ॥ ५ ॥ यों निश्चय है जंबू ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने प्रथम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अज्झणा पण्णंता तंजहा-(गाहा)-जालि, मयालि, उवयालि। पुरिससेणं वारिसेणय, ॥ दीहदंतेय,लट्ठदंतेय,विहल्ले,विहायस्से,अभयकुमारे ॥१॥६॥ जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाईय दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता,पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ७ ॥ एवं खलु जंबू! तेणंकालेणं तेणंसमएणं रायगिहे नयरे रिद्धीत्थिमिय समिद्धा, गुणसिलए

अर्थ

वर्ग अनुत्तरोववाइ दशांग के दश अध्ययन कहे हैं, उन के नाम—१ जालि कुमार का, २ मयाली कुमार का, ३ उज्वालि कुमार का, ४ पुरुषसेन कुमार का, ५ वारीसेण कुमार का, ६ दीर्घ दंत कुमार का, ७ लष्ठदंत कुमार का, ८ विहल्ल कुमार का, ९ विहांस कुमार का, और १० अभय कुमार का ॥ ६ ॥ यदि अहो भगवान ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोंने प्रथम वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं तो प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा ? ॥ ७ ॥ यों निश्चय हे जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी ऋद्धि समृद्धिकर युक्त थी, राजगृही के बाहिर ईशान कोन में गुनसिला नमाक चैत्य था, राजगृही नगरी में श्रेणिक राजा राज्य करता था, श्रेणिक राजा की धारनी नामे रानी थी, वह धारनी एकदा पुन्यवंत के शयन करने योग्य शैय्या में सूती हुई

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

चेइस्य सेणिएरायां, धारणीदेवी, सीह सुमिणंप सिरााणं पाडिबुद्धा जाव जालिकुमारेजाए, जहामेहो जाव अट्ठट्ठ उदाओ, जाव उप्पिंपासए जाव विहरंति ॥८॥ तेणंकालेणं तेणं समएणं समणं भगवं महावीरे जाव समोसढे, सेणिय णिग्गओ, जालि जहा मेहो तहा णिग्गओ, तहेव णिक्खंतो, जहा मेहो, एक्कारस्स अंगाई अहिज्झंति ॥ ९ ॥ तएणं से जाली अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता

अर्थ

सिंह का स्वप्न देखा, यावत् नवमहिने साढेसातरात्रि व्यतीत हुवे सुकुमार कुमार का जन्म हुवा, बारवे दिन जालि कुमर नाम दिया, बालवय मुक्त हुवे विद्याभ्यास किया, यौवन अवस्था प्राप्त होते आठ राज्य कन्याओं के साथ पानी ग्रहण कराया, आठ २ दात दायचा की दी यावत् मेघ-कुमार की तरह ऊपर महलों में सुख भोगवता विचरने लगा ॥८॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे, श्रेणिक राजा और परिषदा दर्शनार्थ आई, धर्मकथा सुनाई, मेघकुमारकी तरह जाली कुमार को भी वैराग्य उत्पन्न हुवा मातापिता से चरचा की आज्ञा ले यावत् ओत्सव पूर्वक दीक्षा ली. मेघकुमार की तरह इग्यारे अंग का अभ्यास किया ॥ ९ ॥ तब वे जाली अनगार जहां श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी थे तहां आये आकर श्रमण भगवंत श्री महावीर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ २ त्ता एवं वयासी—इच्छामिणं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुणाय समाणे गुणरयण संवच्छरंतवो कम्मं उवसंपजिताणं विहरित्तए? अहासुहं देवाणुप्पिया! मपडिबंध करेह ॥ १० ॥ तएणं से जली अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुणाय समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता गुणरयणं संवच्छरं तवो कम्मं उवसं पजित्ताणं विहरइ तंजहा-१ पढमं मासं चउत्थं चउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुक्कट्टुय सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रात्तिं वीरासणेणं अवाउड्ढणय ॥ २ दोच्चं मासं छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवो

अर्थ

महावीर स्वामी के वंदना नमस्कार करके यों कहने लगे—यों निश्चय अहो भगवान! आपकी आज्ञा होतो मैं चहाताहूं कि गुणरत्न संवत्सर तपकर्म अंगीकार कर विचरूं? भगवंतने कहा-हे देवानुप्रिया! जैसे सखहो वैसे करो प्रतिबंध मतकरो ॥ १० ॥ तब श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी की आज्ञा हुवे जाली अनगार श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके गुनरत्न संवत्सर तप कर्म प्रारंभ किया तद्यथा—प्रथम महिने एकमहिने तक एकान्तर उपावास के पारने निरन्तर किये, तपश्चर्या के दिनको उत्कटासन से सूर्य के सन्मुख रहे सूर्य का ताप सहन किया और रात्रि को वस्त्र रहित वीरासन से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गुणरत्न संवत्सरतप.

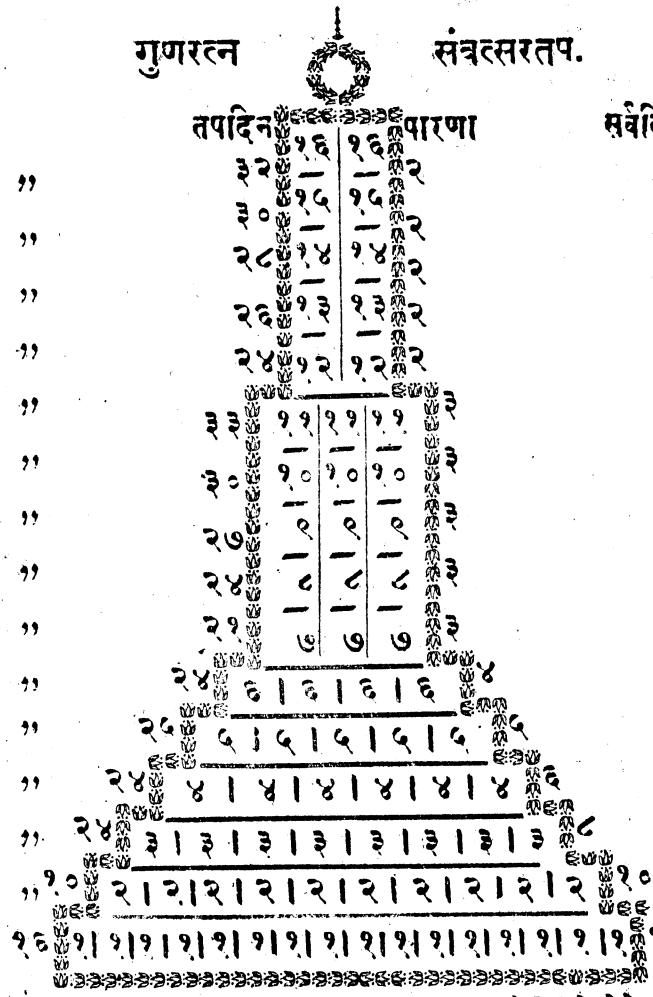

इस की विधी-पहिले महिने एकान्तर उपवास, दूसरे महिने बेले २ पारना तीसरे महिने तेले२पारना, यावत् सोलवे महिने में सोले २ उपवास के पारना करे दिनको उक्कटासन से सूर्यकी आतापना लेवे और रात्रिको वस्त्र रहित वीरासन से ध्यानकरे. इस तपके सब तपदिन ४०७ पारणे के दिन ७३ यों सबदिन४८०होते हैं जिसके १४महिने होते हैं इतने में यह तप पूर्ण होता है.

Jain Education International
For Personal & Private Use Only
www.jainelibrary.org

सूत्र

कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सुराभिमुहे आयावण भूमीए आयावेमाणे, रत्तिं बीरासणेणं आवउड्ढेणय ॥ ३ तच्चंमासं अट्ठमं अट्ठमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकमेणं दियट्ठाणू कट्टूए सुराभिमूहे, आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं विरासणेणं अवाउड्ढेणय॥४चउत्थंमासं दसमं दसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुकट्टूए सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं आवाउड्ढेणय ॥ ५ पंचमंमासं बारसम बारसमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकट्टूए सूराभिमूहे आयावण भूमिए आयावेमाणे रत्तिंविरासणेणं अवाउड्ढेणय ॥ ६ छट्ठेमासं चउदसमेणं २ अणिक्खितेणं तवो कम्मेणं दिथाठाणुकट्टुए सूरामीमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिवीरासणेणं अवाउड्ढेणय ॥ ७ सत्तामंमासं सोलसमं सोलमेणं अनिक्खितेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणू कट्टूए सुराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणे अवाउ-

अर्थ

रहते ऐसे ही दूसरे महीने में एक महिने तक छट २ (बेले) २ पारने करते और सब विधी उक्त प्रकार ३ ऐसे ही तीसरे महीने में एक महीने तक अष्टम २ [तेले २] पारना करते सर्वविधी उक्त प्रकार ॥ यों यावत् सोलवे महीने में एक महीने तक चौंतीस२ भक्त [सोले२] उपवास के पारने करते दिनको उत्कटासन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

ट्ठुणय ॥ ८ अट्ठमंमासं अट्ठारसमं अट्ठारसमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियाठाणुकट्टू सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिंबीरासणेणं अवाउड्डेणय ॥ ९ णवमंमासं वीसइमं वीसइमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकट्टूए सूराभिमूहे आयावणभूमीए, रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्डेणय ॥ १० दसमंमासं बावीसाए बावीस ईमेणं अनिक्खित्तेणं दियट्ठाणूकट्टूए सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणेणं रत्तिं वीराम अवाउड्डेणयं ॥ ११ एक्कारसमंमासं चउवीसाए चउवीसईमेणं अनिक्खितेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकट्टूए सूराभिमूहे आयावेमाणे रत्तिंविरासणेणं अवाउड्डेणयं ॥ १२ बारसमंमासं छव्वीसाए छव्वीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिय-ट्ठाणु कट्टुए सूराभिमूहे आयायण भूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउड्डेणय

अर्थ

से सूर्य की आतापना लेते और रात्रिको वस्त्र रहित वीरासन से रहते ॥ ११ ॥ तब उन जाली अनगारने गुनरत्न संवत्सर तपकर्म को सूत्रोक्त विधी प्रमाने साधु के कल्प प्रमाने जिन मार्ग कीरीति प्रमाने, भगवंतने कहा वैसा यथा तथ्य सम्यक् प्रकार अपनी कायाकर स्पर्श विशुद्ध भावपाला, शुद्धता पूर्वक, पार पहोंचाया कीर्तियुक्त भगवंत की आज्ञा प्रमाने आराधन किया ॥ १२ ॥ फिर जहां श्रमणभगवंत श्री महावीर स्वामी थे तहां

सूत्र ॥ १३ तेरसमंमासं अठावीसाए अठावीसईणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकट्टुए सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ॥ १४ चउदसमंमासं तीसइ तीसइमेणं अनिक्खितेणं तवोकमेणं दियट्ठाणु कट्टुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणं. रत्तिंवीरासणेणं अवाउढेणय ॥ १५ पन्नरसमंमासं बत्तीसएमं बत्तीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियाठाणुकट्टुए सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ॥ १६ सोलसमंमासं चोतीसएणं चोतीसइमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणु कट्टुए सूभिमूहे आयावण भूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासमेण अवाउडेणय ॥ १७ ॥ तएणं से जाली अणगारे गुणरयणं संवच्छरं तवो कम्मं आहासूतं अहाकप्पं अहामग्गं अहा तच्चं समकाएणं फासित्ता पालित्ता सोहिता तिरिता किट्टिता आणाए

अर्थ आये, आकर श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर उपवास बेले तेले चोला पचोला मास खमन (३० उपवास) आधामास खमन (१५ उपवास) आदि विचित्र प्रकार के तप कर्म से अपनी आत्मा को भावते हुवेविचरनेलगे ॥१३॥ तब उन जाली अनगारका शरीर उस

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अराहिता ॥१२॥ जेणेव समणे भववं महावीरे तेणेवेउवागच्छइ २ त्तासमणं भगवं माहावीरं वंदइ नमंसइ वंदइत्तानमंसइत्ता बहुहिं चउत्थछट्ठ अट्ठमदसम दुवालसेहिं मासेहिं अधममास खसमणेहिं विचित्तेहिं तवो कम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १३ ॥ तएणं से जाली अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयतेणं पग्गइएणं एवं सचेव जहा क्खंदस्स वत्तव्वया तहा चेव आपुच्छणा, थेरेहिं सद्धिं विपुलं तहेव दुरुहंति, णवरं सोलस्स वासाइं समण्ण परियाग्गं पाऊणित्ता कालं मासं कालंकिच्चा उड्ढं चांदिमाई सोहम्मीसाण जाव आरणाच्चुयोकप्पे नवएगेवेज्जयविमाणं पत्थडेओ वित्तिवषाती विजय विमाणे देवत्ता उववण्णे ॥ १४ ॥ तयाणं थेरा भगवंतो जालि अणगारं

अर्थ

विचित्र प्रकार के उदार-प्रधान प्रकर्ष तप करके जिस प्रकार स्कन्ध का कथन भगवती में कहा उस ही प्रकार शरीर से दुर्बलपने यावत् धर्म जागरणा की तैसे ही भगवंत को पूछकर कडाये (संथार में साहय करे ऐसे) स्थविर को साथ लेकर विपुलगिरी पर्वत पर पृथ्वी सिलापट्ट पर संलेखना की, यावत् सोलह वर्ष संयम पाला, काल के अवसर में काल पूर्ण करके ऊर्ध्व सौधर्म ईशान सनतकुमार माहेन्द्र इत्यादि बारह देवलोक नवग्रैयिक को उल्लंघनकर विजय विमान के पाथडे में गये, विजय विमान में देवतापने उत्पन्न हुवे ॥ १४ ॥ तब स्थविर भगवंत जाली अनगार को काल प्राप्त हुवे जानकर कायुत्सर्ग किया, ॥

कालगयं जाणित्ता, परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेइ, पत्तचीवराइं गिण्ह २ तहेव उत्तरंति जाव इमेसे आयथार भंडए॥१५॥ भंतेत्ति! भगवं गोयमे जाव एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जालीनामं अणगारं पगइभद्दए, सेणं जालि अणगारे कालगए कहिंगए कहिं उववण्णे? ॥ एवं खलु गोयमा! मम अन्तेवासी- तहेव जहा क्खंदयस्स जाव कालगए उड्ढं चंदिमा जाव विजय विमाणे देवत्ताए उववणे ॥ १६ ॥ जालिसणं भंते! देवस्स केवइयं कालं ट्ठिई पण्णत्ता? गोयमा! बत्तीसं सागरोवमाइं ट्ठिई पण्णत्ता ॥ १७ ॥ सेणं भंते!

अर्थ

उन जाली अनगार के धर्मोपकरण पात्रे वस्त्रादि ग्रहण कर पर्वत से उतरे, उतरकर भगवंत के पास आये वंदना नमस्कार कर उपकरण सुपरत किये ॥ १८ ॥ भगवान से, भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे. अहो भगवन्! आपका शिष्य प्रकृतिका भद्रिक जाली अनगार, काल के अवसर काल कर कहां गया कहां उत्पन्न हुवा? हे गौतम! मेरा शिष्य तैसे ही खंदक की परे आयुष्य पूर्ण कर यावत् उपर चन्द्रमा सूर्य बारे देवलोक नवग्रीयवेक को उल्लंघनकर विजय विमान में देवतापने उत्पन्न हुवा है ॥ १८ ॥ अहो भगवन्! जाली देवता की कितने काल की स्थिति है?

सूत्र

ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठीक्खएणं कहिंगच्छति कहिउववज्जंति ? गोयमा ! महाविदेहेवासे सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ ॥१५॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ इति पढम वग्गस्स पढमअज्झवणं सम्मत्तं ॥१॥१॥ एवं सेसावि नवण्हं भाणियव्वं, णवरं सत्तधारणी सुत्ता, विहल्ल विहास चेलणाए, अभयणंदाए ॥ १ ॥ आइलाणं पंचण्हं सोलस्स वासाइं, तिण्हं बारस्स वासाइं,

अर्थ

हे गौतम ! बत्तीस सागरोपम की स्थिति कही है ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जालीदेव देवलोक से आयुष्य का भव का स्थिति का क्षय कर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होवेगा ? हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में जन्म ले संयम ले सिद्ध बुद्ध मुक्त होवेगा सर्व दुःख का अन्त करेगा ॥ १८ ॥ यों निश्चय, हे जम्बू ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन का यह अर्थ कहा है ॥ १७ ॥ इति प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन संपूर्ण ॥ १ ॥ १ ॥ जिस प्रकार जाली कुमार का अधिकार कहा वैसा ही बाकी रहे. नव ही कुमारों का अधिकार जानना, जिसमें इतना विशेष—सात कुमार तो धारणी राणी के पुत्र, विहल्ल कुमार और वे हांस कुमार चिल्लना राणी के पुत्र, और अभय कुमार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

दोण्हपंचवासाई,स माणपरियाणं। २।आइल्लाणंपंचण्हं अणुपुव्वीए उववाओ,विजय विजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे उक्कोसे सेसा अभओ विजय ॥ ३ ॥ सेसं जहा पढमे ॥ ४ ॥ अभयस्स णाणत्तं-रायगिहे णयरे, सेणिएराया, णंदादेवी माया ॥ सेसं तहेव ॥ ५ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं पढम्मस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ इति पढमो वग्गो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ×

अर्थ

नन्दा राणी के पुत्र ॥ १ ॥ पहिले पांच अनगारोंने सोलह २ वर्ष संयम पाला, तीनोंने बारे २ वर्ष संयम पाला और दोनोंने पांच २ वर्ष संयम पाला ॥ २ ॥ पहिले पांचजने अनुक्रम से-जाली कुमार विजय विमान में, मयाली कुमार विजयंत विमान में, उवयाली कुमार जयंत विमान में, पुरिससेन कुमार अपराजित विमान में, वारीसेन कुमार सर्वार्थ सिद्ध विमान में, दीर्धदन्त सर्वार्थ सिद्ध विमान में, लष्टदंत अपराजित विमान में, विहल्ल जयंत विमान में, विहांस विजयंत विमान में और अभयकुमार विजय विमान में, उत्पन्न हुवे ॥३॥ शेष कथन प्रथम अध्ययन के जैसा जानना ॥४॥ अन्तिम के अभयकुमार राजगृही नगरी, श्रेणिक राजा पिता, नन्दादेवी राणी माता, शेष प्रथम अध्ययन तैसेही॥५॥यों निश्चय,हे जम्बू! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोंने अनुत्तरोपपातिक दशा के प्रथम वर्गका इस प्रकार का अर्थ कहा ॥इति प्रथम वर्ग समाप्त ॥१॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ द्वीतीय-वर्ग ॥

जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयस्स पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्सणं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाई दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ १ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयस्स दोच्चस्स वग्गस्स तेरस्स अज्झयणा पण्णत्ता?तंजहा-(गाहा)-दीहसेणे,महासेणे,लट्ठदंतेय, गुढदंतेय, ॥ सुद्धदंतेय, हल्ले, दुम्मे, दुम्मसेणे, महादुमसेणेय ॥ १ ॥ आईए सिहेय, सीहसेणेय, महासीहसेणेय आहिए ॥ पुणसेणेय बोधव्वा, तेरसमो होंतिअज्झयणे ॥२॥

अर्थ यादि अहो भगवान ! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उनोंने अनुत्तरोपपातिक दशा का प्रथम वर्गका उक्त अर्थ कहा, तो अहो भगवान! अनुत्तरोपपातिक दशाके दूसरे वर्गका श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोंने क्या अर्थ कहा ? ॥१॥ यों निश्चय हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोने दूसरे वर्ग के तेरे अध्ययन कहे हैं तद्यथा-१ दीर्घसेन कुमार का, २ महासेन कुमार का, ३ लष्टदन्त कुमार का, ४ गुढदन्त कुमारका, ५ शुद्धदन्त कुमार का,६ हल्लकुमार का,७ द्रुमकुमार का, ८ द्रुमसेन कुमार का ९महासेन कुमार का, १० सिंह कुमारका,११ सिंहसेन कुमार का,१२ महासिंहसेन कुमार का, और१३पुण्यसेन कुमरका जानना, यह दूसरे वर्गके तेरे अध्यन के नाम हुवे ॥ २ ॥ यादि अहो भगवान ? श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उनोंने

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस्स अज्ययणा पण्णत्ता, दोच्चस्सणं भंते ! वग्गस्स पढम अज्झयणस्स जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥*॥ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहेणयरे गुणसिले चेईए,सेणिएराया,धारणीदेवी,सिंहे सुमिणे जहा जाली तहा जम्मणं, बावत्तरंकलाओ, णवरं दीहसेणेकुमारे सव्ववत्तव्वया,जहा जालिस्स जाव अंतंकरंति। १।एवंतेरस्स विरायगिहे नयरे सेणिए पिया,धारिणी माया, तेरस्सण्हंवि सोलसवासाए परियायं मासीयाए संलेहणाए आणुपुव्वीए उववाओ विजय दोणि, विजयं ते दोणि, जयंतेदोणि, अपराजिते दोणि,

१९

अर्थ

दूसरे वर्ग के तेरे अध्ययन कहे तो दूसरे वर्ग के प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा ? ॥ ० ॥ यों निश्चय हे जम्बु ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी, गुनसिला बाग, श्रेणिक राजा, धारनी रानी, सिंहका स्वप्न देखा, दीर्घसेन कुवर नामदिया. शेष जैसा जाली कुमार का अधिकार कहा तैसा ही सब इसका बालक्रीडा कहना, बहुतर कलापंडे, विशेषमें दीर्घसेन नामदिया आदि वक्तव्यता जानना. जिस प्रकार जालि कुमार विजय विमान मे गया तैसे यह भी विजय विमान में गया यावत् महाविदेह से मुक्ति जावेगा ॥ १ ॥ इस प्रकार ही तेरही अध्ययन का अधिकार जानना, तेरे ही की राजगृही नगरी, श्रेणिक

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सेसा महादुम्म सेणं माइये पंच सव्वट्ठ सिद्धि ॥१॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं दोच्चस्सवग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोसुवि वग्गेसु त्तिबमि ॥ बीओ वग्गो सम्मत्तो ॥ २ ॥ * *

अर्थ

राजा पिता, धारणी राणी माता, तेरीहीने सोलह वर्ष संयम पाला, सब के एक महीनें की सलेषना जानना. अनुक्रम से, विजय विमान में दो, वेजयंत में दो, अपराजित में दो और शेष महासेन आदि पांच सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुवे सब महाविदेह में मोक्ष जावेंगे ॥११॥ यों निश्चय, हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति से पधारे उनोंने अनुत्तरोपपातिक दशा के दूसरे वर्ग का यह अर्थ कहा ॥ इति द्वितीय वर्ग समाप्त ॥ २ ॥

॥ तृतीय-वर्ग ॥

सूत्र

जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइए दसाणं दोच्चरस वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते; तच्चस्सणं भंते! वग्गस्स अणुत्तरोववाइय दसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥ १ ॥ एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं तच्चस्सवग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा)-धणेय,सुनक्खत्तेय, इसियदासेय, आहिते ॥ पेल्लाए रामपुत्तेय, चंदमा, पुट्ठिमाइया ॥ १ ॥ पेढलपुत्ते आणगारे, नवमो पोट्टिलतिय ॥ विहल्लेय, दसमेवुत्त, एते अज्झयणा आहिया ॥ २ ॥ जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस

अर्थ

यदि अहो भगवन्! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी धर्मकी आदिके करता यावत् मुक्ति पधारे उनोंने अनुत्तरोपपातिक दशाका दूसरे वर्गका उक्त अर्थ कहा,तो अनुत्तरोपपातिक दशाके तीसरे वर्गका क्या अर्थ कहा?॥१॥यों निश्चय, हे जम्बू! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त हुवे उनोंने तीसरे वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं, उन के नाम—१ धन्ना अनगार का, २ सुनक्षत्र अनगार का, ३ ऋषिदास का, ४ पेल्लक पुत्र का ५ राम पुत्र का, ६ चन्द्र कुमार का, ७ पोष्टि पुत्र का, ८ पोढाल कुमार का, ९ पोटिला साधु का, और १० विहल्ल कुमार का. यह दश अध्ययन कहे हैं ॥ २ ॥ यदि अहो भगवन्! श्रमण भगवंत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥३॥ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थामिया सामिद्ध, सहसंबवणे उज्जाणे सव्वओय, जियसत्तुराया, ॥४॥ तत्थणं काकंदीय नयरीए भद्दाणामं सत्थबाही परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभुया ॥५॥ तीसेणं भद्दासात्थावाहीए पुत्ता धन्ना नामए दारए होत्था अहीणा जाव सुरूवा, पंचधाई परिग्गहिइ,

अर्थ

यावत् मुक्ति प्राप्त हुवे उनोंने तीसरे वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं तो अहो भगवन्! प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त हुवे उनोंने क्या अर्थ कहा है? ॥ ३ ॥ यों निश्चय, हे जम्बू! उस काल उस समय में काकंदी नामकी नगरी थी. वह ऋद्धि समृद्धिकर संयुक्त थी, उस के ईशान कौन में सहश्रम्ब नाम का उध्यान था, वहां जीत शत्रु नाम का राजा राज्य करता था ॥ ४ ॥ तहां काकंदी नगरी में भद्रा नामकी सार्थ वाहिनी रहती थी, वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभवित थी ॥ ५ ॥ उस भद्रा सार्थ वहीनी के धन्नानाम का पुत्र था वह पांचोइन्द्रियों कर पूर्ण यावत् सुरूपवंत था, वह पांच धायमाता से परिवरा हुवा बृद्धिपाया जिन के नाम—१ क्षीर-दूधपिलाने वाली धाय २ मज्जन कराने वाली, ३ भूषण पहनाने वाली, ४ गोद में खिलाने वाली और ५ क्रीडा कराने वाली, यावत् महाबल कुमार की तरह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तंजहा—खीरधाईए जहा महाबलो जाव बावत्तरिकलाओ अहिज्जंति जाव अलंभोग समत्थं जाएआविहोत्था ॥ ६ ॥ तएणं से भद्दा सत्थवाहिं धण्णदारयं उमुक्क बालभावं जाव भोगसमत्थंच वियाणिया, बत्तीसं पासाय वडिंसए कारेई, २त्ता अब्भूग्गय मूसीए जाव तेसिंमज्झं भवण अणेग खंभ सयसन्निविट्ठं॥जाव बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसेणं पाणिगिण्हावेई, बत्तीसंओदाओ जाव उप्पिंपासाय फुडएहिं जाव विहरंति ॥ ७ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणे भगवं महावीरे समोसड्ढे, परिसानिग्गया, राय जहा कोणिओ तहा जियसत्तु णिग्गओ ॥८॥ तएणं तस्स

अर्थ

बाल्यावस्था से मुक्त हो विज्ञान अवस्था को प्राप्त हो बहुतर पुरुष की कला का अभ्यास किया यावत् संपूर्ण भोग भोगवने समर्थ हुवा ॥ ६ ॥ तब भद्रासार्थ वहीनी धन्ना कुमर को बाल्यावस्था से मुक्त हो यावत् भोग भोगवने सामर्थहुवा जानकर उस केलिये बत्तीस प्रसाद कराये वे बहुत ऊंचे [सप्त मजले] यावत् उनके मध्यमेंएक भवन अनेक स्थम्भोकर वेष्टित था. यावत् उसधन्ना कुमारको बत्तीस ईभसेठकी कन्याके साथपानी ग्रहण कराया यावत् प्रसादपर मृदंग के सिरफूटते हुवे पांचोंइन्द्रिय के सुख भोगवते हुवे विचरनेलगे ॥ ७ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारें सहश्रम्ब उध्यान में विराजमान हुवे, परिषदा आई जीत शत्रु राजा भी कोणिक राजा की तरह वंदने आया ॥ ८ ॥ तब उस धन्नाकुमार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

धण्णदारयस्स तं महया जणसद्दं जहा जमाली तहा णिग्गए. णवरं पायविहारेणं जाव जं णवरं अम्मया भद्दं सत्थवाहं आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, जाव जहा जमालि तहा अपुच्छिया, मुच्छिया, वुत्त पडिवुत्तिया, जहा महाबलो जाव नोसंचाईय, जहा थावच्चा पुत्तस्स जहा जियसत्तु आपुच्छाइमि, छत्त चामराओ

अर्थ

को भगवंत अगमकी खबर लोगों के महाशब्द सुन जानी, जिसप्रकार जमाली वंदने आयाथा उसही प्रकार धन्नाकुमर भी आया जिसमें विशेष यह पांवोंसे चलकर आया, धर्मकथासुनी परिषदा राजा पीछेगये, धन्नाकुमर धर्मकथा श्रवनकर हर्ष संतोषपाया यावत् कहनेलगा अहो भगवान! मैं मेरीमाता भद्रासार्थ वाहिनीसे पूछकर आपके पास दीक्षा लेवूंगा. भगवंतने कहा जिस प्रकार सुख होवे वैसा करो, तब धन्नाहर्ष संतोष पाया अपने घरको आया जमालीकी तरह माता से प्रश्नोत्तर हुवे यावत् जिस प्रकार महाबल कुमार के मातपिता ललचा सकेनहीं उस ही प्रकार यह भी ललचाये नहीं, जिस प्रकार थावरचा पुत्र की माताने दीक्षा के उत्सव की कृष्णजी से याचना की थी उसही प्रकार भद्रासार्थवाहीनीने जीत शत्रुराजा से दीक्षा महोत्सव की याचना की, जित शत्रुराजा चतुरंगनी सेना सज यावत् सर्व सामग्री युक्त धन्नासार्थ वही के घरगया, धन्नाकुमारको समजाया, वह ललचाया नहीं तब जितशत्रुराजाने दीक्षाउत्सव किया, छत्रचमर

सुत्र

सयमेव जियसत्तु निक्खमणं करेइ; जहा थावच्चा पुत्तस्स कण्हे, जाव पव्वइए, अणगारेजाए, इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ ९ ॥ तएणं से धण्णे अणगारे, जंचेव दिवसे मुडेभवित्ता जाव पव्वइयाए तंचेव दिवसेसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जाव जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिले परिग्गहिएणं तवो-

अर्थ

जितशत्रु राजा स्वयं धारनकर जिस प्रकार थावरचापुत्र को कृष्णजीने दीक्षा दिलाइ थी उस ही प्रकार धन्ना कुमार को भी जितशत्रुराजाने दीक्षा दीलाइ, यावत् धन्ना अनगार हुवे इर्यासमिती समिता यावत् गुप्तब्रह्मचारी बने ॥ ९ ॥ तब धन्न अनगार जिस दिन दीक्षा धारण की उसही दिन श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी को वंदना नमस्कार कर इस प्रकार अभिग्रह धारन किया-यों निश्चय अहो भगवन् ! आप की आज्ञा होतो मैं जावजीव पर्यन्त बेले २ तप निरन्तर करूं, बेले के पारनें में आयंबिल करूं इस प्रकार तप कर्म से अपनी आत्मा को भावता हुवा विचरूं, बेले के पारने में मुझे आयंबिल-लूक्ख एक ही प्रकारका अन्न ग्रहण करना कल्पे किन्तु आयंबिल विना पारना करना कल्पे नहीं, वह भी आहार भरे हुवे हाथ से देवे तो लेना कल्पे किन्तु विना भरे हाथ से देवे तो लेना कल्पे नहीं, वह भी आहार घरवालों के खाकर वाढहो-बचा हुवा हो जो किसी के काम में नहीं आतहो उसे ऊकरडी आदी

सूत्र

कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए, छट्ठस्स वियणं पारणगंसि कप्पंइ मे आयंबिले पडिग्गाहित्तए, णोचेवणं अणाआयंबिलं, तंपिय संसट्ठेणं णो चेवणं असंसट्ठेणं, तंपियणं उज्झियं धम्मियं णो चेवणं अणुज्झियं धम्मियं, तंप्पियणं जं अन्ने बहवे समणे माहणे अतिहि किवण वणिमग्ग णावकंक्खंति ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंध करेह ॥ १० ॥ तएणं धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ तुट्ठ जाव जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खितेणं तवो कमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरई ॥ ११ ॥ तएणं धण्णे अणगारे पढम छट्ठखमणं पारणंयंसि पढमाए पोरसियं सज्झायं

अर्थ

पर डालने जाते हों वैसा लेना कल्पे किन्तु घर में रखने जैसा होतो वह आहार लेना कल्पे नहीं, वह भी नहाखने जाताहो, उसेअन्य दूसरा श्रमण साक्यादि, महाण-ब्रह्मणादि अतीथी बावाजोगी, कृपण-रांक वनीमग भिक्षाचर को देने से उस आहार की वांछा कर नहीं ऐसा एकान्त निकम्मा न्हाखने लायक बला जला खुरचनादी का खराब आहार ग्रहणकर उस से पारना करना कल्पे ? भगवंतने कहा जिस प्रकार तुमारी आत्मा को सुख उत्पन्न हो वैसे करो, किन्तु धर्मकार्य में विलम्ब मतकरो ॥ १० ॥ तब धन्नाअनगार श्रमण भगवंत महावीर स्वामीजी की आज्ञाप्राप्तकर हर्ष तुष्ट हुवे यावत् जावजीव बेले २ तपकर्म अन्तर रहित करते हुवे अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ ११ ॥ तब धन्नाअनगार प्रथम आयंबिल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

करेति जहा गोयमसामी आपुच्छंति जाव जेणेव काकंदी णयरी तेणेव उवागच्छइ २
त्ता काकंदीय णयरीए उच्च जाव अडमाणे अयंबिले णो अणायंबिलं जाव नाव कंक्खंती
॥१२॥ तएणं धण्णे अणगारेताए आभुज्जताए पयत्ताए पग्गहियत्ताए एसणाए, एसमाणे
जइ भंते लब्भइ णो पाणं लब्भइ, अह पाणं लब्भइ णो भत्तं लब्भइ ॥१३॥ तएणं से धन्ने

अर्थ

के पारने के दिन प्रथम प्रहर में स्वध्याय की, दूसरे प्रहर में ध्यानधरा, तीसरे प्रहर में मुहपती वस्त्र पात्रादि का प्रतिलेखनकर गौतम स्वामीजी की तरह भगवंत से पूछकर यावत् जहां काकंदि नगरी तहां आये, काकंदी नगरी के ऊंच क्षत्रियादि के कुलों में, नीच कृपणादि के कुलों में मध्यम वणिकादि के कुलों में भीक्षार्थ परिभ्रमण कर आयंबिलवाला लूक्खा एकही प्रकार का धान्य ग्रहण किया, किन्तु आयंबिल बिना का चिकना आदि विविध प्रकार के आहार की वांछा भी की नहीं, तथा श्रमण ब्राह्मणादि के काम में न आवे ऐसा आहार ग्रहण किया ॥ १२ ॥ तब धन्ना अनगारने आहार के मालक गृहस्थ से पूछकर उस आहार को ग्रहण किया. किन्तु बिना पूछा ग्रहण किया नहीं, वह भी परतीत उत्पन्न हो ऐसा आहार ग्रहण किया, किन्तु किसी प्रकार अप्रतीत हो [निन्दा हो] ऐसा आहार ग्रहण किया नहीं. ग्रहण करते कभी आहार मिले तो पानी नहीं मिले, और कभी पानी मिले

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसायी अपरित्तजोगी जयणघडण जोगचरित्त अहपज्जत्त समुदाणं पडिगाहित्ति २ त्ता काकंदीणयरीओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जहा गोयमे तहा पडिदंसइ॥ १४॥तएणं से धण्णे अणगारे,समणं भगवं महावीरेणं अब्भणुणाए समाणे अमुच्छाए जाव अणज्झोववन्ने विलमिव पणगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारिइ २त्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावमाणे विहरंति॥ १५॥तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाई काकंदीओ णयरीओ सहसंब वणाओ उज्झाणाओ पडिणि-

अर्थ

तो आहार नहीं मिले ॥ १३ ॥ तब धन्य अनगार इस प्रकार आहार की प्राप्ति में, दीनपने रहित, किमन [उदासी] रहित, आकुलता रहित, आहाट दोहट चित्त के (व्याकुलता)विचार रहित, तृष्णा रहित मनादि जोग है जिन का ऐसे यत्नयुक्त यथा पर्याप्त चाहिये उतना आहार बहुत घरों से ग्रहण किया, ग्रहण कर काकंदी नगरी से निकलकर, गौतम स्वामी की तरह भगवंत को आहार बताया ॥ १४ ॥ तब वे धन्य अनगार श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीकी आज्ञा प्राप्तहोते मूर्च्छा रहित यावत् लुब्धाता रहित जिस प्रकार बिलमें सर्प प्रवेश करता है उस ही प्रकार ममत्व रहित आहार किया, आहारकर संयम तपसे अपनी आत्मा भावते हुवे विचरने लगे ॥ १५ ॥ तब श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी अन्यदाकिसीवक्त काकंदी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

क्खमइ२त्ता बहिया जणवय विहरंति ॥ १६ ॥ तएणं से धण्णेअणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस्सअंगाई अहिज्झंति, सजमेणं तवसाअप्पाणं भावेमाणे विहरंति ॥१७॥तएणं से धण्णे अणगारे तेणं उरालेणं तवो कम्मेणं जहा खंदओ जाव सुहुय हुयासणेइव तेयसा जलंति उवसोभेमाणे चिट्ठंति॥१८॥धन्नसेणं अणगारस्स पायाणं इमेयारूवे तवरूव लावण्णहोत्था से जहा नामए—रुक्खछालीइवा, कट्ठपाउयाइवा, जरगाउवाहणाइवा, एवामेव धन्नस्स अणगारस्स पाया सुक्का भुक्खा लुक्खे निमंसा अट्ठि चम्म छिरत्ताए पन्नायंति, नो

अर्थ

नगरी के सहश्रम्ब उद्यान से निकले निकलकर बाहिर जनपद देश में विचरने लगे ॥ १६ ॥ तब वे धन्ना अनगार श्रमण भगवंत श्री महावीर के पासके तथारूप स्थविर भगवंत के पास सामायिकादि इग्यारे अंगका अभ्यास किया, संयम तपकरके अपनी आत्माको भावते हुवे विचरने लगा ॥ १७ ॥ तब वह धन्ना अनगार उस औदार्य प्रधान तप कर सूक्षगये भूकबने रूक्ष हुवे तद्यपि तप तेज कर खन्धक अनगार की परे जिस प्रकार राख से ढकी हुई अग्नि शोभती है. इस प्रकार शोभादेते थे ॥ १८ ॥ धन्ना अनगार के पांव इस प्रकार तप कर लावण्यता को प्राप्त हुवे, यथा दृष्टान्त-वृक्ष की छाल, लक्कडकी पवडी [खडावें] पुरानी पगरखी (जूते) जिस प्रकार के होते हैं, इसप्रकारके धन्ना अनगार के पांव सूके भूकरूक्ष मांस रहित हुवे थे,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

चेवणं मंस सोणियत्ताए॥ १९ ॥ धन्नस्स अणगारस्स पायंगुलीयाणं अयमेयारूवे से जहा नामए कलसंगालियाइवा मुग्ग-माससंगलियाईवा, तरुणिया छिण्णा उण्हेदिण्णा सुक्कासमाणी मिलायमाणी चिट्ठंति, एवामेव धन्नस्स अणगारस्स पायंगुलिया सुक्काओ जाव णो मंससोणिएतए ॥ २० ॥ धन्नासणं अणगारस्स जंघाणं अयमेया रूवे-से जहा नामए—काकजंघाइवा, ढेणियालियजंघाइवा, जाव णो सोणियात्तए ॥ २१ ॥ धन्नस्सणं जाणूणं अयमेयारूवे से जहा नामए-कालीपोरेइवा, मयुरपोरेइवा, ढिणिया लिया पोरेइवा, एवं जाव णो सोणियाच्चए ॥ २२ ॥ धण्णस्सउरु से जहा नामए-

अर्थ

आस्थि (हड्डी) चमडा नशा जाल देखाती थी किन्तु मांस और रक्त करके रहित थे ॥ १९ ॥ धन्ना अनगार की पांव की अंगुलीयों इस प्रकार की थी—यथादृष्टन्त—तूअर की फली, मूंग की फली, उडद की फली, इन फलीयों को हरेपने में कच्चेपने में ही छेदन कर धूप के ताप में सुकाने से कुमलाकर जिस प्रकार देखाती है, इस प्रकार धन्ना अनगार की पांव की अंगुलियों सूकी यावत् मांस रक्त रहित हुइ थी ॥ २० ॥ धन्ना अनगार की पांव की जंघा [पींडी] इस प्रकार यथादृष्टान्त काग की जंघा जैसी, ढांक पक्षी की जंघा जैसी, यावत् रक्त मास रहित थी॥२१॥ धन्ना अनगार के जानु [घुटने] यथादृष्टान्त काग के ढीचन, मयुर के ढींचन, ढांक के ढींचन इस प्रकार थे यावत् मांस रक्त रहित थे ॥ २२ ॥ धन्ना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सामकरिल्लिइवा, बोरिकरिल्लिइवा, सल्लइयकारिल्लिइवा, सामलीकरिल्लइवा, तरुणाय छिन्नाउण्हेदिण्णा जाव चिट्ठइ, एवामेव धन्नस्स उरु जाव णो सोणियात्तए॥२३॥धन्नस्स काडि पिट्ठस्स इमेयारूवे, से जहा नामए-उंट्टपाएइवा, जरग्गपाएइवा, महिसपाएइवा जाव णो सोणियत्तए ॥ २४ ॥ धन्नस्स उदर भायणस्स अयमेयारूवे से जहा नामए-सुक्कदीइइवा, भज्जणयकभल्लिइवा, कट्ठकोलंबएइवा, एवा मेव उदरसुक्कं ॥ २५ ॥ धन्नस्स पासुलिया करंडयाणं इमेयारूवे से जहा नामए-थासयावलिइवा, पीणावलीइवा, मुंडावलीइवा, सुंडावलीइवा गोलावलीइवा एवामेव०॥२६॥धण्णस्स पिट्ठकरंडगाणं-अयमेयारूवे से

अर्थ

अनगार का उरु (साथल) यथादृष्टान्त प्रियंगुवृक्ष की शाखा, बोरडीवृक्ष की शाखा, सांगरीवृक्ष की शाखा, हरेपने में छेदन कर धुप के ताप में सूकाने से कुमल्लाकर जैसी देखाती है तैसी मांस रक्त रहित थी ॥ २३॥ धन्ना अनगार की कमर का विभाग इस प्रकार था यथा दृष्टान्त—ऊट का पांव, जरख (बेला) का पांव, भेंस का पांव यावत् रक्त रहित था ॥ २४ ॥ धन्ना अनगार का उदर (पेट) भाजन [बरतन] इस प्रकार था, यथादृष्टन्त—सूकी हुइ चमडे की मशक, रोटी पकाने का कडहावला, लक्कड की कथरोटी, इस प्रकार पेट सूका था ॥ २५ ॥ धन्ना अनगार के पांसलीयों करंड इस प्रकार था, यथादृष्टान्त—बांस का करंडीया, बांसकी टोपली, बांसके पासे, बांसका मूंडला यावत् रक्त रहितथी ॥२६॥धन्ना अनगारका पृष्ट विभाग इस

सूत्र

जहा नामए-कज्जावलीइवा, गोलावलीइवा, वट्टावलीइवा, एवामेव०॥२७॥धण्णस्स उरु करंडयस्स अयमेयारूवे से जहा नामए-चित्तय कंदूरेइवा, विणयपत्तेइवा, तालियंटेण पत्तिइवा, एवामेव०॥ २८ ॥ धन्नस्स वाहाणं से जहा नामए- समिसंगलियाइवा, वाहायसंगलियाइवा, अगत्थियसंगलियाइवा एवामेव० ॥ २९ ॥ धण्णस्स हत्थाणं से जहा नामए-सुक्क छगणियाइवा, वडपत्तेइवा, पलासपत्तेइवा, एवामेव० ॥ ३० ॥ धन्नस्स हत्थंगुलियाणं से जहा नामए-कालसंगलियाइवा, मुग्ग-माससंगलिकाइवा, तरुणिया छिन्ना आयवदिण्णा सुक्कासमाणी एवामेव०॥ ३१ ॥ धन्नस्सगीवाए से जहा

अर्थ

प्रकार था-यथादृष्टान्त-बांस की कोठी, पाषान के गोलों की श्रेणी, घडोंकी श्रेणी इस प्रकार॥२७॥ धन्ना अनगार की छाती इस प्रकार की थी यथादृष्टान्त—बिछाने की चटाइ, पत्ते का पंखा, दुप्पड का पंखा, इस प्रकार ॥ २८ ॥ धन्ना अनगार की बांह यथादृष्टान्त—समले की फली, पाडाडे की फली, अगथीये की फली, इस प्रकार ॥ २९ ॥ धन्ना अनगार के हाथ (पंजे) यथादृष्टान्त-सूका छाना (कंडा) बड का पत्ता, पलास का पत्ता इस प्रकार ॥ ३० ॥ धन्ना अनगार के हाथ की अंगुलीयों इस प्रकार तुवरकी फली,मुंगकी फली उडदकी फली, हरी कच्ची छेदनकर धूप के तापमें सूकाइ होने से कुमलाइ हुइ देखाती है इसप्रकार॥३१॥ धन्ना अनगार की ग्रीवा (गरदन)यथादृष्टान्त-लोटे का गला,कूंडे-या कमंडलका गला, कोथ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

नामए-करगगीवाइवा, कुडियागीवाइवा, कोत्थवणाइवा, उच्चत्थवणाइवा एवामेव०॥३२॥ धन्नस्स हणुयाणं से जहा नामय-लाउफलेइवा, हकुवफलेइवा, अंबगट्ठियाइवा, एवामेव० ॥ ३३ ॥ धन्नस्सणं उट्ठाणं से जहा नामए-सुक्काजलोयाइवा, सिलिसेगुलियाइवा, अलत्तगगुलियाइवा, अंबाडगपेसीयाइवा एवामेवा०॥३४॥धन्नस्स जिहा-से जहा नामए वडेपत्तेइवा, पलासपत्तेइवा, उबरपत्तेइवा, सागपत्तेइवा, एवामेव०॥३६॥धन्नस्सनासियाए से जहा नामए-अनंग पेसियइवा, अंबडग पेसियाइवा, माउलिंगपेसियइवा, तरुणि-याइवा, एवामेव० ॥ ३६ ॥ धण्णस्स अत्थिणं से जहा नामए-वीणाछिद्देइवा बधीसग छिद्देइवा, पभाइयतारगाइवा, एवामेव० ॥ ३७ ॥ धन्नस्स कन्नाणं, से जहा नामए-

अर्थ

लीका मुख, उर्द्धमुख भाजन इस प्रकार॥३२॥ धन्ना अनगारकी हणु [दाढी] यथादृष्टान्त सूका तुम्बा, हकुन का फल, आम्र की गुठली इस प्रकार॥३३॥ धन्ना अनगार के होष्ट (होट) यथादृष्टान्त-सूकी जलोक, सूका श्लेषम, अलत (लाख) की गोली इस प्रकार॥३४॥ धन्ना अनगार की जिव्हा यथादृष्टान्त—बड का पत्ता, पलास (खांखरे) का पत्ता, गुलर का पत्ता, साग का पत्ता, इस प्रकार ॥३५॥ धन्ना अनगार की नाशीका यथादृष्टान्त—आंबकी कतली, अम्बाडे की गुठली, बीजोरे की कतली, हरी छेदकर सुकाइ हो ऐसा ॥ ३६ ॥ धन्ना अनगार की आंख यथादृष्टान्त—वीणा के छिद्र, बांसली के छिद्र, प्रातःकालके सतारे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

मुलाछल्लियाइवा, वालुकीछल्लियाइवा, कारेल्लयछल्लियाइवा, एवामेव० ॥ ३८ ॥ धन्नस्स अणगारस्स सीस्स अयमेवरूवे से जहा नामए—तरुणगलाउएतिवा, तरुणगए लालुयाइवा, सिण्हालएइवा, तरुणाए छिन्न जाव मिल्लाएमाणी चिट्ठंति एवामेवधन्नास अणगारस्स सीसं सुक्कं भुक्खं लूक्खं निमंसं अट्ठि चम्म छिरत्ताए पन्नायंति नोचेवणं मंस सोणियत्ताए ॥ ३९ ॥ एवं सव्वत्थमेव णवरं उदरभायणं, कन्ना, जिहा, उट्ठा, एसिं अट्ठि नभणंति, चम्मछिरत्ताए पन्नायंति इति भणंति ॥ ४० ॥ धन्नेणं अणगारे सुक्केणं भुक्खेणं पाय जंघारुणाविगत तडिकरालेणं कडिकडिहिणं पिट्ठ मणुस्सिएणं

अर्थ

इस प्रकार ॥ ३७ ॥ धन्ना अनगार के कान मूले की छाल, खरबुजे की छाल, करेले की छाल, इस प्रकार ॥ ३८ ॥ धन्न अनगार का मस्तक यथा दृषान्त तरून काले का फल, तुम्बेका फल, सिल्हाकंद तरूनपने में जैसा होता है इस प्रकार का धन्ना अनगार का मस्तक सूका लूखा मांस रहित अस्तिका चमडे कर वैष्टित था निश्चय से मांस और रक्त था उस में नहीं था॥ ३९ ॥ इस प्रकार सब शरीर जानना जिसमें इतना विशेष, उदर, कान, जिव्हा, होष्ठ, इतने स्थान में अस्थि(हड्डी) नहीं कहना परन्तु चमडे का वर्णन करना ॥४०॥ धन्ना अनगार का शरीर सूकगया भूख हुवा लूक्खा होगया, पाव जंघा साथल, सह शरीर शुष्क तप से, उठते बैठते करड २ शब्द करने लगा, पृष्ट भाग मांस लोही रहित उदर भाजन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

उदरभायणेणं जोइज्जमाणेहिं पंसुलीकरंडएहिं अक्खसुत्तमाला विवगणिज्जमाणाहिं पिट्ठिकरंडगसंधिहिं गंगातरंगभूएणं, उरकडाग देसभाएणं सुक्क सप्प समाणेहिं बाहाहिं सिढिलकडालीविव लंबतेहिय अग्गहत्थेहिं कंपणवइओविवदेतमाणेहिं सीस-घडिए पंव्वायवदनकमेल उब्भडवडामुहे उच्छुद्दनयणकोसे; ॥ ४१ ॥ जीवं जीवेणं गच्छइ, भासं भासिस्सामिति गिलायइ से जहा नामए—इंगालसगडियाइ [illegible], जहा खंधओ तहा हुयासणे इव भासरासी पलिछिन्ने,तवेणं तेयणं तवतेयं सिरिए अतिव२

अर्थ

जैसा युक्त पांसलियों का करंड सूत में परोये मालाके दाने अलगरगिन लिये जावे त्यों शरीर की हडीयों अलगरगिना लिये जावे,पृष्ट करंड छाती करंड गङ्गाकी तरङ्गो समान,सूकी हुई बांह सूके हुवे सांप समान,सूका हुवा शरीर हस्त का अग्रभाग सूके थोरे के हत्ये समान था, चलते हुवे अगकम्पाय मान होता था. हडीयोंका शब्द होता था, जिस प्रकार वायु के रोगकर शरीर कम्मता है उस प्रकार मस्तक हलता [illegible], मुख कमल पत्र समान निस्तेज देखाता था, आंखो अंदरगइ देखाती थीं, इस प्रकार शरीर कोष्ट होगया था ॥ ४१ ॥ धन्ना अनागर जीव की शक्ति के आधार से चलते थे, भषा बोल पहिले बोलती बक्त और बोलवाद खेदित होते थे, उन का शरीर उठते बैठते करंड २ शब्द करता और चलती वक्त जिस प्रकार कोयले की भरी हुइ गाडी खड २ बजती है त्यों शरीर के अन्दर की हाड्डियों का आवाज होता था, जिस प्रकार स्कंध की जीका वर्णन, भगवती सूत्र में कहा है वैसा इन का भी सब जानना यावत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ ॥ ४२ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं रायगिहे णयरे, गुण-सिलए चेइए, समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसाणिगया सेणिओ णिगओ, धम्म-कहा, परिसा पडिगया ॥ ४३ ॥ तएणं से सेणिएराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मंसोच्चा निसम्म समणं भगवं वंदइ नमंसइ वंदइत्ता नगंसित्ता एवं वयासी इमेसिणं भंते ! इंदभूई पामोक्खाणं चउद्दसण्हं समणं साहसीणं कयरे अणगारे महादुक्कर कारएचेव महाणिज्जरकाराएचेव ? ॥४४। एवं खलु सेणिया ! इमीसिं इंद भूइ पामोक्खाणं चउद्दसण्हं समण साहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्कर कारएचेव,

शरीर करतो सूक गये थे न्तु तप कर पुष्ट हुये सूर्य की तरह तप तेजकर दिप्त थे बहुत २ शोभते हुवे रहे थे ॥ ४२ ॥ उस काल उस समय में, राजग्रही नगरी, गुनसिला चैत्य, श्रेणिक राजा, श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आई, श्रेणिक राजा भी आया, धर्म कथासुनाई, परिषदा पीछी गई ॥४३॥ तब श्रेणिक राजा श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी जीके पास धर्म श्रमण कर हर्ष संतोष पाया, श्रमण भगवंत महावीर स्वामीजी को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर पूछने लगा—अहो भगवान ! यह इन्द्रभूतीजी प्रमुख चउदह हजार साधु हैं. इन में दुक्कर करनी के करने वाले कौन साधु हैं महानिर्जरा के करने वाले कौन साधु है ? ॥ ४४ ॥ तब भगवन्तने कहा यों निश्चय हे श्रेणिक ! यह इन्द्रभूती प्रमुख

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

महानिज्जरकारएचेव॥ ४५॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ इमासिं चउद्दसाहिं समण साहस्सिणं धन्ना अणगारे महादुक्कर कारएचेव महानिज्जरा कारएचेव?॥ ४६॥ एवं खलु सेणिया! तेणंकालेणं तेणंसमएणं काकंदी नाम नयरी होत्था, जाव उप्पिए पासए वाडिंसए विहरइ॥ तत्तेणं अहं अण्णयाकयाइ पुव्वाणुपुव्विंचरेमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव काकंदी नयरीए जेणेव सहस्सबवणेउज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २त्ता अहापडिरूवंउग्गहं उग्गहित्ता संजमेणं तवसा जाव विहरमि ॥ परिसाणिग्गया, तंचेव जाव पव्वइए जाव

अर्थ

चउदह हजार साधुओंमें धन्ना अनगार महादुक्कर करनीका करनेवाला है महानिर्जराका करनेवाला है॥४५॥ अहो भगवन्! इन चौदह हजार साधुओं में धन्ना अनगार दुक्कर करनी करता हैं. महा निर्जरा करता है ऐसा किसलिये कहा?॥४६॥ यों निश्चय हे श्रेणिक! उसकाल उससमय में काकंदी नामकी नगरीथी, वहां भद्रासार्थ वाहिनी का पुत्र धन्ना बत्तीस स्त्रीयों के साथ प्रमाद के ऊपर सुख भोगवता विचरता था. तब मैं अन्यदा किसी वक्त पूर्वानुपूर्व चलता हुवा ग्रामानुग्राम उल्लंघता हुवा जहां काकंदी नगर का सहश्रम्ब उद्यान था, तहां गया, जाकर यथा प्रतिरूप अवग्रह ग्रहण कर संयम तप कर आत्मा को भावता हुवा विचरने लगा, परिषदा आइ, धन्ना आया यावत् दीक्षा धारन की यावत् जैसे बिल में सर्प प्रवेश करता है तैसे ही आहार

सूत्र

बिलमेव जाव आहारेंति, धन्नस्सणं अणगारस्स सरीरवन्नओ सव्वो जाव उवसोभे माणे चिट्ठइ, से तेणट्ठेणं सेणिया ! इमं वुच्चती इमीसे चउदसण्हं समणसहस्सीणं धन्नेअणगारे महादुक्करचेव कारए महानिज्जरकराएचेव ॥४७॥ तत्तेणं से सेणियराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम हट्ठतुट्ठे समणं भगवं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहीणं करेइ वंदइ नमंसइ २ त्ता जेणेव धन्ने अणगारे तेणेव गवागच्छइ २ त्ता, धन्न अणगारं तिखुत्तो आयाहीणं पयाहीणं करेइ वंदेइ नमंसइ वंदइत्ता नमंसइत्ता एवं वयासी--धन्नेसिणं तुमे देवाणुप्पिया !

अर्थ

करता है. (यहां पूर्वोक्त प्रकार सब शरीर का वर्णन किया) यावत् शोभता हुवा विचरता है. इस लिये हे श्रेणिक! ऐसा कहा कि इन चौदह हजार साधुमें धना अनगार दुक्कर करनी का करनेवाला है महानिर्जरा का करनेवाला है ॥ ४७ ॥ तब श्रेणिक राजा श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास उक्त कथन श्रवणकर हृष्ट तुष्ट हुवा श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर जहां धना अनगार था तहां आया, आकर धन्ना अनगार को तीन वक्त हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिराकर वंदना नमस्कार कर यों कहने लगा. अहो देवानुप्रिय ! धन्य है तुमारे को, तुम पुण्यवन्त हो, हे देवानुप्रिय ! तुम कृतार्थ हो, कृतलक्षणी हो,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल

पुत्तेसिणं तुमे देवाणुप्पिया! कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धेणं देवाणुप्पिया! तवमणुस्सए जम्म जीवियफले त्तिकट्टु, वंदइ नमंसइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव वंदइ नमंसइ २ त्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ ४८ ॥ तएणंतस्स धन्नास्स अणगारस्स अन्नयाकयाइं पुव्वरत्ता वरत्तकाल समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमीयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए मणोगएसंकप्पे समुप्पज्जित्था, एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं जहा खंधओ तहेव चिंता अपुच्छणा, थेरेहिसद्धिं विपुल पव्वयं दुरुहइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए

अर्थ

अहो देवानुप्रिया! तुम को अच्छा प्राप्त हुवा मनुष्य जन्म जीवित का फल ऐसी प्रसंशा कर वंदना नमस्कार करके, जहां श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी थे तहां आया, श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को तीन वक्त वंदना नमस्कार कर जिस दिशा से आया था उसदिशा पिछा गया ॥ ४८ ॥ तब धन्ना अनगार अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि व्यतीत हुवे धर्म जागरना जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय मनोगत संकल्प उत्पन्न हुवा—यों निश्चय में इस औदार तप से जिस प्रकार खन्धक जीने विचार किया था वैसाही किया तैसेही भगवंतको पूछकर कडाइये स्थविरके साथ विपुलगिरी पर्वत पर चढकर संलेखनाकी

सूत्र

नवमास परियाओ जाव कालमासे कालकिच्चा उड्ढं चंदिमा जाव नवेयगेविज्जविजयविमाण पत्थडे उड्ढं दुरंवितिवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ ४९ ॥ थेरा तहेव उत्तरंति जाव इमेसे आयरभंडए ॥ ५० ॥ भंतेत्ति, भगवं गोयमे तहेव पुच्छइ जहा खंधयस्स भगवं वागरेति जाव सवट्ठसिद्धि विमाणे उववन्ने ॥ ५१ ॥ धन्नस्सणं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिइपन्नत्ते ? गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ट्ठिति पन्नत्ते ॥ ५२ ॥ सेणं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ट्ठितिक्ख-

अर्थ

एक महीने की संलेषना, नवमहीने पूर्ण संयम पालकर यावत् काल के अवसर काल पूर्ण करके उर्द्ध चन्द्रमा सूर्य से भी ऊपर यावत् ग्रयवेक विजय विमान उल्लंघकर सर्वार्थ सिद्ध महाविमानमें देवतापने उत्पन्न हुवे ॥ ४९ ॥ स्थवीर पर्वतमें नीचेमें उतरे यावत् धन्न अनगारके भंडोप करण भगवंत के सुपरत किये॥५०॥ जिस प्रकार भगवती सूत्र में खंदक की पूछा की है उस ही प्रकार गौतम स्वामीने यहां भी पूछा की— तब भगवंतने कहा कि—हे गौतम ! धन्ना अनगार यावत् सर्वार्थ सिद्ध महाविमान में देवतापने उत्पन्न हुवा है ॥ ५१ ॥ अहो भगवन् ! धन्ना देवता की कितने काल की स्थिति है ? हे गौतम ! तेंतीस सागरोपम की स्थिति कही है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! वह देवलोक से आयुष्य पूर्ण कर कहां जायगा

एणं कहिंगच्छंति कहिंउववज्जेहिंति ? गोयमा ! महाविरेहवासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति परिणिव्वाहिंति सव्वदुक्खाण मंतं करेहिंति ॥५३॥ एवं खलु जंबू!, समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ ५४ ॥ इति तियवग्गस्स पढम अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ १ ॥ जइणं भंते ! उक्खेवओ- एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं काकंदी नामं नयरीहोत्था, भद्दासत्थवाही परिवसइ, अड्ढा ॥ १ ॥ तीसेणं भद्दाए सत्थवाहीपुत्ते सुनक्खत्ते नामं दारएहोत्था, अहिण जाव सुरूवे, पंचधाइ परिक्खित्ते जहा धन्ने तहेव बत्तीस्स उदाओ जाव

अर्थ

कहां उत्पन्न होगा? हे गौतम ! महाविदेहक्षेत्र में अवतार ले संयम धारन कर यावत् सिद्ध होंगा बुद्ध होंगा मुक्त होगा, परिनिर्वान होगा यावत् सब दुःख का अन्त करेगा ॥५३॥ हे जम्बू ! निश्चय श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने प्रथम अध्ययन का यह कथन कहा ॥ इति तृतीय वर्ग का प्रथम अध्ययन संपूर्ण ॥३॥१॥ यदि अहो भगवान दूसरा अध्याय, यों निश्चय, हे जम्बू ! उस काल उस समय में काकंदी नाम की नगरी में भद्रा नाम की सार्थवाहीनी यावत् ऋद्धिवन्त रहती थी ॥ १ ॥ उस भद्रा सार्थवाहीनी का पुत्र सुनक्षत्र था, पंचेन्द्रिय से पूर्ण यावत् सूरूप था, पांच धाईसे वृद्धि पाया जिस प्रकार धन्ना का अधिकार कहा उस ही प्रकार बत्तीस स्त्रीयों बत्तीस दात यावत् प्रसाद के उपर सुख भोगवत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

उप्पिए पासाए वडिंसए विहरइ ॥२॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं सामी समोसढे जहा धन्ने तहा सुणक्खत्तेवि निक्खंत्ते जहा थावच्चा पुत्तस्स तहा निक्खमणं जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारिए ॥ ३ ॥ तएणं से सुनक्खत्ते अणगारे जंचेव दिवसं समणस्स भगवंओ महावीरस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइए तंचेव दिवसं अभिग्गहं तहेव विलमिव पणग भूएणं आहार आहारेइ, संजमेणं जाव विहरइ ॥ ४ ॥ समणं जाव वहिया जणवया विहरइ ॥ एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जइ, संजमेणं तवस्सा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ५ तएणं से सुनक्खत्ते अणगारे तेणं उरालेणं जहा खंधओ ॥ ६ ॥ तेणंकालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणासिला चेइए, सेणियाराया, सामीसमोसढे, परिसाणिग्गया,

अर्थ

विचरता था ॥ २ ॥ तब भगवंत पधारे धन्ना की तरह सुनक्षत्र का भी दीक्षा उत्सव जानना यावत् अनगार हुवे ईर्या समिती यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हुवे ॥३॥ उसी दिन से तैसा ही अभिग्रह धारन किया, यावत् सर्प बिल में प्रवेश करे त्यों आहार करते संयम तप से आत्मा भावते विचरने लगे ॥ भगवन्त बाहिर जनपद देश में विहार किया ॥ सुनक्षत्र अनगार इग्यारे अंग पढे संयम तप से आत्मा भावते विचरने लगे ॥ ५ ॥ तब सुनक्षत्र अनगार उस औदार प्रधान तप कर खंधक जैसे हुवे ॥ ६ ॥ उस काल उस समय में राजगृही नगरी, श्रेणिक राजा भगवंत पधारे, परिषदा आई, धर्मकथा सुन, परिषदा और राजा पीछे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

धम्मकहीओ राया-परिसहा पडिगया॥७॥तएणं तस्स सुनक्खत्तस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्त-जाव धम्म जागरियं जाव खंधयस्स बहुवासाओ परियाओ ॥८॥ गोयम पुच्छा जाव सव्वठसिद्ध विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥ जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिंति ॥९॥ इति वीयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ २ ॥ एवं खलु जंबू ! सुनक्खत्ते गमेणं सेसावि अट्ठ भाणियव्वा, अणुपुव्विए-दोन्नि रायगिहे, दोन्नि साइए, दोन्नि वाणियगामे, नवमो हत्थिणापुरे, दसमोरायगिहे॥ १ ॥नवण्हं भद्दा जणणिओ, नवण्हं निक्खमणं थावच्चापुत्त सारिसं, वेहलप्पिया करेइ, नवमासधण्णे वेहलछमासा परियाओ, सेसाणं बहुवा-

अर्थ

गये ॥ ८ ॥ तब वह सुनक्षत्र अणगार अन्यदा किसी वक्त धर्म जागरणा जागते खंधक जैसा विचार किया यावत् संथारा किया बहुत वर्ष संयम पाल काल समय काल पूर्ण कर सर्वार्थ सिद्ध विमान में देव उत्पन्न हुवा ॥ ९ ॥ गौतम स्वामीने पूछा, भगवंतने सर्वार्थ सिद्ध में उत्पन्न हुवे कहा, तेंतीस सागर का आयुष्य कहा यावत् महा विदेह में सिद्ध होंगे ॥ इति तृतीय वर्ग का द्वितीय अध्ययन संपूर्ण ॥ ३ ॥ २ ॥ यों निश्चय, हे जम्बू ! जिस प्रकार सुनक्षत्र का कथन कहा तैसा बाकी रहे आठो ही का कहना, अनुक्रम से—दो राजगृही नगर में, दो सेतम्बिका नगरी में, दो वानीज्य ग्राम में, नववा हस्तिनापुर में,और दशवा राजगृही नगरीमें॥१॥नवों की भद्रा माता,नव ही के बत्तीस स्त्रीयों, बत्तीस दात,नव ही का औत्सव थावरचा पुत्रके जैसा,वेहल कुमारका दीक्षा उत्सव पीताने किया,धन्ना अणगार नव महीने और वेहल कुमार छेमहिने

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

साइं, मासं सलेहणा सव्वे महाविदेहवासेसिज्झिहिंति ॥ एवं दस अज्झयणाणी ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं तउवस्स वागस्स अयमट्ठे पन्नंत्ते ॥ अणुत्तरोववाइए दसाओ सम्मत्तअ ॥ अणुत्तरोववाइ दसाणं एगोसुयखंधो तिनिवग्गा तिसु दिवसेसु उद्दीसिज्जंति, पढमेवग्गे दस उद्देसग्ग, वीएवग्गे तेरस्स उद्देसगा तइएवग्गे दस उद्देसगा, सेसं जहा धम्मकहा नायव्वं ॥ नवमं अंगसम्मत्तं ॥ ९ ॥

अर्थ

दीक्षा पाली, शेष सब बहुत वर्ष दीक्षा पाली सबके एक महीनेकी सलेषना, सब सर्वार्थ सिद्ध विमानमें उत्पन्न हुवे, सब महाविदेह में सिद्ध होंगे. यों दश ही अध्याय संपूर्ण ॥ ३ ॥ १० ॥ यों निश्चय, हे जम्बू ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने अनुत्तरोपपातिक दशाका तीसरा वर्गका यह अधिकार कहा. अनुत्तरोपपातिक दशाका एक श्रुतस्कन्ध तीन दिनमें उद्देशना ॥ प्रथम वर्ग के दश अध्ययन, दूसरे के तेरा और तीसरे के दश अध्ययन सर्व तेंतीस अध्याय शेष जैसा ज्ञाता धर्मकथामें अधिकार जानना ॥ इति नवमांग अनुत्तरोववाई दशांग संपूर्ण ॥ ९

॥ इति नवमांग ॥

अणुत्तरोववाई दशा सूत्र समाप्तम्

विराब्द २४४ वैशाक शुक्ल ८ शनिवार.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्रोद्धार प्रारंभ

वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

इति

अनुत्तरोववाई दशांग सूत्र

समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति

वीराब्द २४४६ विजयादशमी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org